



HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDU A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Tuesday 21 May 2002 (afternoon)
Mardi 21 mai 2002 (après-midi)
Martes 21 de mayo de 2002 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir cette épreuve avant d'y être autorisé.
- Rédiger un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

(क)

‘भइया कभी भी मेरी जान मरवा सकते हैं।’

‘ऐसा क्यों?’

‘मैं उनके धन का हिस्सेदार जी हूँ। हम दोनों का बाप एक ही था।’

‘तब तुम डरपोक ही क्या नगीना, जो अपना हिस्सा छोड़ दोगे?’

5 मुझे लगा, लपककर पुरवा की गले लगा लूँ। पुरवा मुझे भउजी से भी आत्मीय लगी थी। मैंने कहा,

‘मुझे कौन हिस्सा दिलाने में मदद करेगा भउजी!’

‘मैं करूंगी!’

10 ‘तुम करोगी!’ अचानक ही मेरे हाथ उसकी ओर बढ़ गए थे। पुरवा भी उसी तरह चुपचाप खड़ी थी, बल्कि उसी ने झुककर ढिबरी मुंह से फूँक दी थी। उसे शायद लग रहा था कि हमें कोई देख नहीं रहा है। वह बोली, ‘अगर सखी मर्द का बच्चा है तो अपने भइया से हिस्सा ले ली और तब मुझे ब्याह कर ले आओ।’

15 उसी क्षण के बाद मैंने गाँव छोड़कर कहीं जाने का इरादा तोड़ दिया था। पुरवा से मुझे बड़ी हिम्मत हुई थी। मैंने तत्काल भउजी से माँगकर रोटी खाई थी और कछार की ओर चल दिया था। आज मुझे गंगा का सन्नाटा भी अच्छा लग रहा था। चार घंटे तक सीने के लिए अभी मेरे पास पड़ा था। लेकिन नौद नही आ रही थी। मुझे लग रहा था कि पुरवा मुझे संवारने के लिए ही इस गाँव में आई है। मुझे आज तक किसी ने भी ऐसी बातें कहकर हिम्मत नहीं दी थी। यहाँ तक कि रात्रि-पाठशाला वालों ने भी नहीं। एक बेचारे मास्साहेब थे, मगर वे भी तो गाँव के ही आदमी थे। सबों की तरह डरते थे। धीरे धीरे भइया की हस्ती तो औरों की तुलना में बहुत-बहुत उंची थी। उनकी उंचाई तक झाँकना भी आसान बात नहीं थी। गाँव में किस पर शामत आई है कि हिम्मत कर सकता है।

20 अचानक सामने से आती हुई एक जीप दिखलाई पड़ी। जीप कछार की ओर बढ़ती आ रही थी। मुझे शक हुआ, इस वक्त भइया के आने का भी तो समय नहीं है। फिर दूसरी जीप का यहाँ आने का क्या मतलब है? गाड़ी कछार की ओर बढ़ती आ रही थी। धीरे धीरे चलकर वहाँ से दूर हट गया, जहाँ से उनके बाप की भी पता नहीं चल सके।

25 जीप भरभराभर मेरी झोंपड़ी के सामने ही रुकी, जैसे उस झोंपड़ी की रौंद डालने के लिए जीप खूँखार तरीके से आगे बढ़ी है। वे उतरते ही चारों तरफ टार्च की रोछनियाँ फेंकते हुए कुछ दूँदने की कोशिश कर रहे थे। टार्च के हिसाब से वे चार आदमी लगे थे। पहले तो झोंपड़ी के अन्दर घुसे थे। फिर बालू पर चारों इधर-उधर दौड़ रहे थे, जैसे उनका कोई हीरा-मीती बालू में ढेरा गया है और वो बेचैनी से दूँद रहे हैं। वो जिस हीरा-मीती को दूँद रहे थे उसे भट्टी-भट्टी गालियाँ दे रहे थे। हठात् एक की आवाज़ कछार के सन्नाटे की चीरते हुए मुझे सुनाई पड़ी, ‘साला, जरूर मंत्री जी के घर पर ही रह गया होगा।’

30 इसके बाद जीप डगर से होकर गाँव में घुस गई और कुछ देर बाद फिर लौटकर जिस रास्ते से आई थी उसी रास्ते पर ही गई थी।

कहीं वो मुझे खोजने तो नहीं आए थे? फिर मुझे उसे भट्टी-भट्टी गालियाँ क्यों दे रहे थे?

‘सत्ताचारी’ ‘दस प्रतिनिधि कहानियाँ’ मधुकर सिंह, 1994, किताब घर, नई दिल्ली -110002

- अपने विचारों की प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने कैसी भाषा का प्रयोग किया है ?
- इस गद्य में लेखक ने कौन सी बात कहने का प्रयत्न किया है और विषयवस्तु की प्रस्तुत करने के लिए नगीना तथा उसके भइया के चरित्र कहाँ तक प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किए गए हैं ?
- लेखक की शैली पर विचार विमर्श करते हुए ये बताएं कि इस गद्य ने आप पर क्या प्रभाव डाला ?

(ख)

जाने क्यों ?

जाने क्यों ?

अब हर इंसान से डर लगने लगा है

शायद इसलिए कि

हर पल इसी इंसान की

5 इंसानियत के खिलाफ बगावत करते देखती हूँ

हर चेहरा एक नकाब पहने है

और उस नकाब के पीछे

छिपा शांतिर दरिद्रा

न जाने कब तुम पर वार कर बैठे ।

10 क्योंकि अकसर ऐसा होता है

कि दोस्ती के अलम्बरदार ही

आस्तीन के साँप निकले

मौका पाते ही इनमें से हर कोई

पीठ पीछे से हमला कर देता है

15 और कभी-कभी तो मुँह नीच लेता है सामने से ।

तब सीचती हूँ -

कौन कहता है कि मानव सभ्य हो गया है

सच्चाई तो यह है कि

इसने अपने नुकीले नाखुनों

20 व तीखे जबड़ों की छुपाना सीख लिया है

और ये अलग बात है कि मौका पाते ही

ये प्रकट हो जाते हैं ।

और वह

अपने सामने वाले व्यक्ति की

25 नखीं और दाँतों से रक्त रंजित कर

पुन अपने उसी खील में दुबक जाता है

पर आज

इंसान के इस खूंखार रूप की पहचान लेने के बाद

इंसानियत से विश्वास उठता चला जा रहा है ।

‘कावय वीथिका’ राज वर्मा ‘एम बी डी हिन्दी गार्ड’, बी ए 1, 2002

मल्हीना बुक डिपो, गुलाब भवन, 6 बहादुर शाह मार्ग, नई दिल्ली

- कविता में कवयित्री ने क्या कहने का प्रयास किया है और क्या वह अपनी बात कहने में सफल हो पाई है ?
 - कवयित्री द्वारा दीस्ती के अलम्बरदारों की साँपों के साथ तुलना कहाँ तक मान्य है ?
 - कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतीकरण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?
 - कविता के विषयवस्तु ने मानवता के प्रति आपके दृष्टिकोण पर कैसा प्रभाव डाला ?
-